विभाग - हिन्दी
विषय - भाषा विज्ञान
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा भाग 3
शिक्षण माध्यम - पाठ्य रूप
शिक्षक - डॉ. रीना शर्मा

पाठ - भाषा विज्ञान का ज्ञान विज्ञान की अन्य शाखाओं/विषयों से सम्बन्ध।

छात्र-छात्राओं !

पिछले वर्ग में हमलोगों ने भाषाविज्ञान का व्याकरण और साहित्य के साथ उसके संबंध पर विचार किया था। इस क्रम में ज्ञान विज्ञान और कई विषय हैं जिसमें भाषा विज्ञान और इतिहास तथा भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान पर चर्चा करेंगे।

भाषाविज्ञान और इतिहास

भाषाविज्ञान और इतिहास का सम्बन्ध भी बहुत गहरा है। वैसे ऊपरी तौर पर देखने से दोनों का क्षेत्र अलग-अलग दिखलाई पड़ता है लेकिन तथ्य इसके विपरीत है। सर्वप्रथम तो इतिहास के निर्माण में भाषा विज्ञान सहायक होता है। प्राचीन अभिलेखों, शिलालेखों में कुछ ऐसे तथ्य निहित रहते हैं जो इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, इतिहास की टूटी कड़ियाँ जोड़ने में सहायक होते हैं। भाषाविज्ञान के माध्यम से ही हम उन लेखों को पढ़कर उसका सही अर्थ एवं तात्पर्य मालूम करते हैं। उदाहरणार्थ उत्तर सीरिया में 'हित्ती' के शिलालेखों द्वारा ही यह मालूम हुआ कि हित्ती भी भारत-यूरोपीय परिवार की एक भाषा है। इसके विपरीत मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त अभिलेख न पढ़े जाने के कारण ही सिन्धु घाटी की सभ्यता पर अपेक्षित प्रभाव न पड़ सका। इसी तरह वेदों और उपनिषदों का रचना-काल भी उसमें प्रयुक्त भाषा के आधार पर ही

निर्धारित किया गया है।

दूसरी ओर इतिहास भी भाषाविज्ञान के लिये उपकारक है। भाषाविज्ञान की अनेक समस्याओं का समाधान इतिहास के तथ्यों के आधार पर हो जाता है। उदाहरण के लिए हिन्दी में अरबी, फ़ारसी या अंग्रेजी के शब्दों का आगमन कैसे हुआ? यह तब स्पष्ट हो जाता है जब इतिहास के आधार पर हम यह जानते हैं कि शताब्दियों से भारतीयों का सम्पर्क यहाँ विदेशों से होता रहा है। इसी प्रकार अंग्रेजी में फ्रांसीसी और लैटिन शब्दों के बाहुल्य का कारण इंगलैंड का रोमनों एवं नॉर्मनों का प्रभुत्व रहा है। इस तरह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान

मन और भाषा के सम्बन्धों का निरूपण करते हुए अपने देश के वैयाकरणों ने वाक् के चार भेदों का उल्लेख किया है — 'परा', पश्यंति, मध्यमा और वैखरी। भाषा के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर न केवल उपनिषदों में विचार हुआ है वरन दार्शनिकों ने भी इसका विवेचन किया है। भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान में घनिष्ठ संबंध है। वस्तुतः भाषा मनुष्य के भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति प्रदान करने का माध्यम है। भावों एवं विचारों का सीधा सम्बन्ध मनोविज्ञान से है। व्यक्ति के मनोभावों को प्रकट करने का साधन भाषा है। इस प्रकार मन की आन्तरिक गुत्थियों को सुलझाने एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषाविज्ञान मनोविज्ञान की सहायता लेता है।

मनोविज्ञान की जानकारी के अभाव में भाषा के सभी पक्षों का विवेचन संभव नहीं हो सकता। क्यों किसी शब्द का मन के अनुकूल प्रभाव पड़ता है, क्यों किसी शब्द का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है यह मनोविज्ञान ही बतला सकता है। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने 'भाषाविज्ञान की भूमिका' पुस्तक मे लिखा है कि "भाषा की उत्पत्ति का आधार तो मनोविज्ञान ही है, उसकी परिसमाप्ति भी मनोविज्ञान में ही होती है इसे वे वक्ता एवं श्रोता द्वारा क्रमशः विचारों के प्रेषण और ग्रहण के बीच मन को रखकर स्पष्ट भी करते हैं। यह सत्य है कि मन के अभाव में न तो विचारों का प्रेषण हो सकता है और न ग्रहण। और चूंकि यह क्रिया भाषा के द्वारा माध्यम से होती है अतः मन से संबंधित मनोविज्ञान और भाषा से सम्बन्धित भाषा विज्ञान का सम्बन्ध घनिष्ठ है।" आचार्य शर्मा ने अर्थ परिवर्तन के कारणों को समझाने के लिए भी मनो-विज्ञान का परिज्ञान अपेक्षित माना है। एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, क्यों कालान्तर में अर्थ किसी शब्द का बदल जाता है? यह सब जानने का साधन मनोविज्ञान ही है।

यह बात बड़ी अस्पष्टता से अनुरूढ़ हुई है कि भाषा का स्वरूप प्रतीकात्मक है तथा हमारे मानव की प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों की सूची में इसे सम्मिलित कर देखना इसके प्रति न्याय करने का सही दृष्टिकोण है। फ्रायड और नव फ्रायडवादियों ने यही सिद्ध किया है कि भाषिक सामग्री अवचेतन मानस की सामग्री है। आधुनिक मनोविज्ञान के कारण भाषाविज्ञान ने अपने अध्ययन की सीमाओं का विस्तार किया है। इससे भाषा की अवगति के

कुछ ऐसे सूत्र उपलब्ध किये हैं जो उसे अज्ञात थे और इसका परिणाम मनोभाषिकी (Psycholinguistic) के रूप में सामने आया है।

कुछ विद्वानों ने भाषा के द्वारा मन का निर्धारित होना बताया है। वे यह तो स्वीकार करते हैं कि भाषा का अपना गठन होता है और उसका प्रभाव उस भाषा के बोलने वाले के मनोविज्ञान पर पड़ता है। लेकिन वे यह नहीं स्वीकार करते कि भिन्न भाषा-भाषी समुदायों का मनोवैज्ञानिक गठन इतना पृथक होता है कि वास्तविकता के स्वरूप के विषय में उनके संवाद संभव नहीं हैं। इस प्रकार भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

मेघा श्री
30.5.20.